

12154-116

विश्वनाथ

48.

2713 I

ASHA ARCHIVES

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

रक्षचैत्यविधि

माह ॥ इधुसुतू नोचिय ॥ गुंलाथोकपाइसुतूचालि
तत्रनेचालियथाशकेशपूजायाय ॥ वलिपात १ दि
ततवसुंधाराधिवाशनं ॥ आचार्य नमवज्रकरे ॥ ॐ
वृत्वाभसोतरशनं जपत् १०८ मंत्रं ॐ वसुंधारेस्वा
हा ॥ ततः भावना ॥ इलं इलं इत्येनेन वज्रमय अमि वि
भाव्य ॥ ॐ मेदतिवर्जि भववज्रवंधवं इलं ॥ ॐ हनर
वज्रकोटि इलं ॥ ॐ आ इलं ॥ कमान्पूजाकारयत् ॥ अद्य
ॐ एह हि महादेवी पृथिवी लोकमातरे सचरन्मनुजं
पुर्णादिव्यालंकारभूषितहारनौपूरनिर्नोदवज्रम
त्वप्रपूजित इह अद्य गृह्णित्वैत्यवतं शुशोध्य
हि ही ही इलं स्वाहा ॥ मो कलूय ॥ यधमो अकार मूरवद
क्षणा कितने ॥ कुलिशचुतं मूले ॥ पूजायाय धनवा
चिय ॥ यात हस्तपूजायाय ॥ कुल जत्रहाय ॥ चालि
यके ॥ जजमानतं सिजलया शुवाशफयके ॥ पीठा

दियूजा मराडल थिले ॥ स्वातने सवतनये ॥ चेतयूजा ददा
एविमर्जत वलि होले ये गुदीग संले नको दथु संनयेः
धुति चाकाय थास विधि ॥ ॥ थनं लिक्षम चो

चो ॥ ॥ स चानये ॥ देव थाय गु थात म केश पूजा या यः
विधि थं थनं लि थ कालि नं चारुय ह्यया न हस्त पूजा
या म्यं च न व ह्यय चारुय के ॥ पञ्च रत्न यं चामृत ॥
पंच गंध निर्थ यालं च केश लय धुति नम्ये चारुय
के ह्यय धु म्यं लि थ कालि या न चाविय थ कालि नं श्री
गुरु भराड या न विय गुरु नं सो ध न या य ॥ मत्रा ॥ श्रीं
नमो भगवते वै नो च न य म केतु राजाय न था ग ना
गार हं ने सम्य कं उ ठा या ॥ न य था ॥ श्रीं सुस्मे र म म
य र मा ने र दाने र अ प स्मारो य नि रा लं वे नि रा क ले
नि र्वा ने य शो व ति म हाने जे म वं उ ठा वि द्या ना वि द्वि
ने स्वा हा ॥ धार २१ ॥ पंच पा हार पूजा धु न का व गुरु नं
चा थ कालि या न ल व ह्यय ॥ थ कालि नं दे व था र ह्य

यानलवः॥ स्वस्तिवाकेन देवयानके॥ ५॥

श्रौं वसुदेवाहा॥ चाकाय॥ श्रौं वज्रोद्वायखाहा॥ च

पकोयाय॥ श्रौं अरजेविरजेखाहा॥ चिकनमथुने॥

श्रौं वज्रधातुगडेखाहा॥ थामाहुधने॥ श्रौं वज्रमूकः

नमाकोटयखाहा॥ चाचिने॥ श्रौं वज्रकर्तेश्वरय

खाहा॥ चानोकहाय॥ श्रौं धर्मधातुगडेखाहा॥ श्र

क्षेतनउथने॥ श्रौं धर्मरुक्खाहा॥ पिकाय॥ श्रौं सुष

तिष्ठितवजेखाहा॥ आशतगतय॥ ॥ ॥

थनदेवपूजाविधित्थे॥ थनिरक्षचैत्यारमविधि॥

थनवापूजाविधि॥ रुपांकेशपूजाजोलनथाकरये

श्रीसूर्यार्घ्यगुरुमण्डलपंचगव्यैः सिरुलनयः समा

धिः केशः शग्वनमनपूजाः देवपूजाविधित्थे॥ चा

क्रपूजाः मण्डलथिलैः कितितेः सग्वनतयः चित्पूजा

दक्षणाः विर्जेशनयालनयातके॥ थनित्वापूजाविधि

समाप्त॥ ॥ थनलिदेवव्रतयकेहेथुसुदम

बृहत्पत्रचोम्यं आसनतयडिह् कृतायत्तयत्तेव
हृषलेतस्य श्रीलक्ष्मै चैत्यदक्षदोचिते श्रयंयिते
विहिनंउयके मतद्वोयके ॥ पंचोपाहारपूजायाय
फकोओत्रवोने ॥ थनपाडुष्टूपूर्नाक्षेसग्वतमत
नामवय वलिपात १ जज्ञजोतनथाकलये ॥ लिचाय
गुरुमहत्त पंचगव्यसोधनमिरुतयमराडधिते
विशर्जन इनायपूजाद्वोय विसमाधिः केशाधिका
शन अग्निस्थापन अग्नाडुति ॥ विधिविधानथ्यं पू
जादेवपूजा देवता इति यधर्मोपर्यना ॥ थुतिधुन
कावलक्षे चैत्यदोशमखातनपाये थनसंक्षिप्रप
ष्टिस्थाकर्मनामकर्णनकचुदकर्णस्मेनयायमा
ल थनवज्रतंलक्षे चैत्यधिस्यजाययाय ॥ मंत्र ॥
श्रौतमोमवेबुद्धबोधिमत्त श्रविस्वइंस्व थनधर्म
मूनिपानिकमाकराठतंनस्यंलक्षे चैत्यसंज्ञास्मरथा

नके॥ गुरुमराउ नद नके म पूजाविशर्जन लोहानि
रक्षापंचगव्ये वियलक्षे चै न्य पूजाया नके॥ धलि
बोछायके॥ रलमराउ वोयके॥ देवयान दो हलये॥ थ
नधर्म मूनिपनिसे तंताय अक्षत नो नकं ला हा हा
जोलपंचोने॥ सुनि॥ यो उद्धतं नमामि उद्धनिधि
ज्ञानविशुद्धं वृद्धास्त्रयं उद्धाश्चा उद्धबोधनार्थं मभ
यं नागादि देशकृते॥ तस्मै ज्ञानकृपाशिवजुधरय
कठुष्टनां कृते कछिद्वे नानादी गग्रहनाय भूतविष
तिषाकारभिनो नम॥ स्नानया शल होले॥ थन किका
स्य हा थजोलपंचोने थन खकने॥ समन्वाहरं नुमा
दशगुदि शुसर्व उद्धबोधिसत्त्वस्य पुरतः सर्वतथा
गतचक्रवर्तुस्तपस्य विश्वकलो वस्थिता अ॥ देशि
व्यपतिसे तं रे कमतर रे कचित्तया नावजो हि गुदि
गसंविज्या नावचो नपिं दशदि गलोकपाल आदिं
समस्तं उद्धबोधिसत्त्वस्तथा गतया देवने समस्तं

तथागतः वैलोचनः अक्षोभ्यः स्तनशम्भवः अमृता-
म्भः अमोघसिद्धिः थामयोः लयंचतथागतयाः देवने
शिष्यपतिसेनं प्राधनायात् ॥ सर्वमूज
विद्यादेवताः अहं अमूकनामा दशकुदिक्षु अतिना
नागतपुत्रान्यत्रानां सर्ववृद्धबोधिसत्त्वानां ॥

हगुरुयनिगथे धालसामसलतथागत
नामविद्यायाः कर्मणुत्तुलिधर्मनियनिस
नामहिधनावनीवनेवहलयात्रचोतः न्यदिगु
दगमंविन्यानां चोतः तथागतयाः केशरणावने ॥
हनेनाकालेवनावचोतगुखः हनेवयुगुलिखमि
मविन्याकलथधिलतथागतया आवकथर्मे
यागुकर्मतवधतपुन्ययाफलखव ॥ गुरुतेआज्ञा
दयकल ॥ पुन्यकवुडा आवकाभुन्यकतस्येपुपना
सर्वसत्त्वनिकार्यानाच ॥ सर्वपूयः मनुमोदयामि
विदरेनदशकुदिक्षु ॥ अवैवर्तिक ॥

हे शिष्य यन्निगथे गधालसा श्री ३ लक्षचैत्य उच्यते
यान् दुयात उच्यते यान् धालसा समस्र पानिया
न उद्धारयाये अर्थं न मनुष्य यन्नि संसार उद्धारयाय
यान् हे शिष्य यन्नि शुगुलि धर्मो यो जिवद नो ले म
य सर्वदा कालं ह्यपनि स्य नं धर लपि शुगुलि धर्म या
फलं न समस्र या य मो च न जुय ॥ धर्म च कय व न ना
य दश मुदिक्षु सर्व बुद्धा न ॥ भगवतो यन्नि निर्वात
कामना यो चो र्यरि निर्वाय धारयदि सं धर्म ॥
हे शिष्य यन्नि शुगुलि धर्म या गु पुं न्य या फल गथो
धालसा फिगुदि ग सं विज्या ना व चो न यन्नि तथा ग
न यन्नि मे नं लक्षचैत्य या धर्म या गु ख ज क क ना व
विज्या न ह नं थो ल चैत्य या पुं न्य या फल थो फिगुदि
ग सं विज्या ना व चो न तथा ग न यन्नि मे नं उलि थु लि पुं
न्य उध क स थ्या क ने म फ्र अ सं थ यू न्य फल ध क थ
गु धर्म पुं न्य या फल ज न मा न यन्नि क ल स म स्र ला
क जु या य ॥

यन अर्थ या ये शा दु दु ना य अ धार

कोत्वा ननस्येवा के॥ श्रीं सरश्मिदि २०

यंच २ हर २ हिरि २ ई २ धर २ धिरि २ उर २ तर २ नि

२ वर २ रमिन मन सह अयति मणि ३ ने॥ नय

॥ नो वृद्धाय क रूणा व भासित हृदय य यरा

च न य वै धातु क मनु नराय सर्व मत्तानां

हृन्ना दिव्य गंधर सोय ता उ प भु ज्ये मा म

नू नराय मं स्य क्तं वो धै यति नाय नाय मुग

रौ यो हो॥ य न य ते न्या दि॥ न स्मै रक्षे चै न्यः

भक्ता रकाय अर्थ यति ह्वा हा॥ मुनि॥ न म स्ने स म ह्

या नां जि न धातु क र द क म र्व व द्रा ल यं चै न्य ध र्म धातु

न म लु ते॥ थ न व लि वि य॥ न म लु ते य दि का नां स र्व

न था ग ना नां वा पि ध र्मा नां वा पि ध र्म नां व लि तां अ

अ अ स म स म स ता वा पि सा म ति हर २ स वि त्त रा ग

उ द्ध ध र्म र ते स र २ स्म र २ स म व लो ह स २ व य ग ग रा

म हा व ल र क्ष २ शो जो ल २ न मा ग रे स्वा हा॥ थ न स ता

क्षे र मं ड ल दे व वि स र्ज न या त के॥ थ त २ ल क्ष चै न्य

इसंनयाव्यूजायातके॥थनलक्षचैत्यपंचमुत्रका
नंकेनकंप्रतिष्ठायाये॥गुरुतंवनुतायअक्षतस्वा
नमालापंचतृत्रकागवदाजोनकंजायमंत्र॥वंमणि
मतप्रेजोल२धर्मधातुगर्भेखाहा॥धा१०८खान
मालानकोषायकेतायंलुयवजुनधीय॥थनपरि
क्रमनंभावतास्वातसेलक्षचैतेदेवताविधित्येपू
जा॥थनदेवताहुति॥**त्यादि॥**थनजापनंमंत्र॥ओं
नमः॥सर्ववृद्धवोधिसत्त्वआ॥विद्युदंरं॥य

अकालमृत्युं थनमहत्वाहुतियाये थनदेवा
लिविय थनमिष्याधिवामन लोहगिरिदा म्ये
खाहुति मीषाधिवामन सिफेल्य मराठल
थिले सकलसेनंकिम्बस्वाननने पूर्णयाये
सेनाक्षेरक्षमापत आसिरवादमराठलविमजुन
थनधर्ममूर्तिसेनंकिम्बजोनत्रिषुदक्षनायायेबाके
ओंआकाशधातुभवयवादनथागतहृद्यतथेवग

इदं नतत्र कथयति सत्पक्षमस्तु ॥
अथ पुराचिन्नादेशो मविकरुख्य न भवति ॥
अथ शत्रुने फलति न मय मनोरथ मये
अथ जिवमार स्नान जाति देव स्वे हेले ॥
अथ नतत्र दक्ष नावजा चार्य पूजा वाधा नि
अथ मिहलंति के चुमिह नये शेषा दुवि
अथ नियति से न देव थिय कतय वाके
अथ नतत्र श्री शाके सिंह न थागत स्य बुद्ध क्षत्रे भ
अथ कल्यैवैव श्रुत म न नरे हि म वत्त य वत्त रा ग्ये दक्षी
अथ नया र्थे भद्र वाड कली पुगे जा बुद्धी ये वा सु सि क्षत्रे
अथ आर्या वर्त पुंन्य भूमौ भागे नया लदे शे उ य ह्द दोषी
अथ हे हे रुक् श्री विरुया क्षर व गान नां मि धि वा मि ने श्री
अथ स्वयं भु चैत्य स त्रिधान्य वाग मत्या म श्रि म कृ ले
अथ कृशा वत्या पुर्व कृले मय न या उत्र कृले इहैव न ग
अथ रे भरो म देवा लय स्थाने अथ त्यादि दान य त्यादि

नमो भगवते वासुदेवाय जन्तुधत्तमन्तानकात्मना
भगवान् श्रीशुकलक्ष्मैतयभक्तारकस्यजजमान
मेयथास्त्रोक्तफलमयद त्रैआहुराकात्मना
गर्भेस्वाहा धोचके धतकेशमण्डलपात्र
हाये देवचुयेकलवनेथासनागयना
ने तिर्थसलक्ष्मैतयदोचिनेननिवृत्त
किदलपुत्रिर्नोलनागपद्वनयस्वना
नेमंभावना कृत्तिनीसुन्यतातरविस्वा नोज
कायांमध्यवज्रवरुनवज्रं पूर्वअनन्तनिल दक्षिण
पद्म पश्चिमेतक्षेक उन्नेवातलुकि ईशाणो म
हापद्मे अग्नेशंषयात नैऋत्यकर्कोटक वायुवे
कृतिक वाहिश्वसर्वनागानांविचित्रं धृष पचोप
चारयूजा पूष्यनाम वंज्रवरुनायस्वाहा ओंअ
नन्तायस्वाहा ओंपद्मायस्वाहा ओंनरुकायस्वा

वासुकिस्वाहा ओं शेषयात्राया
 नकायस्वाहा ओं कलिकायस्वाहा आमहाप
 स्वाहा येनोपचारपूजा अर्घ्याये ललटि
 यताय अक्षत द्वाफोलखात्रसाउडुनस्ये
 ननवासुकिक्षेत्रंक कर्कोतकयप्रमह
 यान्नक्तिकवरुणायलदेवति महा
 ममिसि उगधरअयरातडुरु नन्दो
 सागरमहासागरअनवनप्र महानप्र
 ज्ञानमहाकांतिसुरूपमहासुरूप भद्रोदिकम
 होदलशिरिशमहाशिरिशआगछागछमहानागा
 धीपतिभुभुव दानतेत्यादिफुफढस्वाहा धनकि
 नने सुनि ओं मुषिनोकधातोचैत्यकंवर्तितम
 यामिय्यानामजुकंयायदेवतापुजयामेहृन्वान
 मोदतामेम्यकैत्य प्रतिहमुव्रततागाधिपतिचिरंती
 हनशासनत्वप्रशादन ओं घिरिशकुंजस्वाहा शना

अनेनयवायन त्रियदक्षनाया
थननिलप्रत्यनि क्षमक्रमारिपूजा फलाद
मयाचक्र कौलामग्वनविय गनचक्र उक्ति
यवनि मिधयामम्यन् ईतिलक्षचैत्य

प्र

॥

॥

शी ४

अंनमावृक्षाय ॥ अंनमाधर्माय ॥

अंनमःसंघाय ॥

सर्वस्मुरत्तनगजिन्दुवरनलंबोदरे शुंदपुष्प
उत्तावराहित्वरित्वकराशिखरभास्करवेद्य
भवत्पिकीर्त्तित्वात्तभागा पुण्यावकाशा
लः लोकदकस्यानरुतमालरागाहार
वीराल

नृणां श्रीगुरुभास्करादिपुजाभः संकल्प
प्रासादिया लखशोधनगुरुमण्डलादि
जलिनीः क्षाप्यन्मगर्वविद्ये ॥ सिम्भूरतयः
मण्डलादिसमाधिकलशादिघोषिदक
चाकपूजाम् संगीछायचित्तपूजादेराज
कार्यलिविजम् ॥ १ ॥ ७ ॥ ७ ॥

भास्करार्घ्यपुजाभः

तस्मात्तवज्जवागहि सर्वपापप्रमूचनिमालविश्वं
सगिदेवि वृद्धत्वं फलदायनिः शुभम्

ॐ

॥ इति सैव्यविधिमाह ॥

श्रीमद्भक्तिकवि
२११३
I

ASHA ARCHIVES